हिन्दी विभाग
स्नातक तृतीय (III)
पत्र संख्या – 08

नाटक में अभिनेता एवं रंगमंचीयता पर प्रकाश डालें?

नाटक की रचना रंगमंच के लिए की जाती है। अतः अभिनेयता एवं रंगमंचीयता नाटक का प्रमुख तत्व है। नाटक ऐसे हों कि उन्हें सरलता से रंगमंच पर प्रस्तुत किया जा सके। उनमें पात्रों की संख्या कम हो, दृश्य भी सीमित हों तथा ऐसे दृश्य न हो कि उन्हें रंगमंच पर प्रस्तुत करने पर कठिनाई हो। संवाद छोटे-छोटे हों, भाषा सरल हो तथा रोचकता का समावेश हो। नृत्य एवं गीत हों, किन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं होनी चाहिए। नाटक की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण हो तथा संस्कृतनिष्ठ न हो।

वर्तमान समय में नाटक का प्राचीन स्वरूप तो बहुत कुछ लुप्त होता जा रहा है, क्योंकि अब बहुत से लोग नाटक रंगमंच के लिए न लिखकर पढ़ने के लिए लिखने लगे हैं। सिनेमा ने भी नाटकों को बहुत कुछ प्रभावित एवं

परिवर्तित किया है किन्तु नाटक और सिनेमा में मूल अन्तर है वे एक दूसरे के विकल्प नहीं बन सकते।

रंगमंचीयता एवं अभिनेयता के लिए निम्न बातों का होना आवश्यक है:-

1.) नाटक में पात्रों की संख्या यथासम्भव कम हो।

2.) नाटक की कथावस्तु अधिक लम्बी न हो। उसे तीन घण्टे में अभिनीत किया जा सकना चाहिए।

3.) कथावस्तु में ऐसे दृश्य नहीं होने चाहिए जिन्हें रंगमंच पर प्रस्तुत करना सम्भव ही न हो।

4.) कथावस्तु में युद्ध और बाढ़ जैसे दृश्य नहीं होने चाहिए।

5.) दृश्यों की संख्या यथासम्भव कम होनी चाहिए।

6.) संवाद छोटे-छोटे एवं सरल होने चाहिए।

7.) नाटक में दार्शनिक विवेचन नहीं होनी चाहिए।

8.) नाटक में स्वगत कथन यदि हो तो छोटे हों।

9.) भाषा यथासम्भव सरल होनी चाहिए। संस्कृतनिष्ठ भाषा कठिनाई उत्पन्न करती है।

10.) गीत अधिक नहीं होनी चाहिए ।

प्रस्तुतकर्त्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं०- 829227104।

दिनांक
18/12/2020